Rupali Chauby

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

Que (A) नैतिक मार्गदर्शन रूप में 'अंतरात्मा' को समझाइये ?

A. अंत:करण मनुष्य की वह आंतरिक नैतिक शक्ति है जो सही-गलत का साक्षात ज्ञान, परिणाम प्राप्त पर निर्भर किये बिना ही प्रदान करती है।

- यह व्यक्ति को नैतिक पथ पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती है।

(B) भ्रष्टाचार के प्रमुख प्रभावों की विवेचना कीजिये ?

A. भ्रष्टाचार के प्रभाव को किस प्रकार से देख सकते हैं -

- प्रशासन में अकर्मण्यता में वृद्धि होगी
- लाल फीताशाही को प्रोत्साहित करेगा
- प्रशासकीय व्यय में वृद्धि
- सामाजिक असमानता में वृद्धि
- लोककल्याणकारी राज्य की संकल्पना पूरी नहीं होगी आदि

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

(C) महावीर स्वामी के पंच महाव्रत

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे जिनमे पंचमहाव्रत निम्न है-

(1) अहिंसा - मन, वचन, कर्म से किसी को कष्ट न पहुचाने का संकल्प।

(2) सत्य => सदा सत्य बोलो की अवधारणा पर बल

(3) अस्तेय => चोरी नहीं करना

(4) अपरिग्रह => साधनो का संग्रह न करना

(5) ब्रह्मचर्य => इन्द्रियों पर नियंत्रण, विषय वासनाओं का त्याग

3

(D) व्हिसल-ब्लोअर से आप क्या समझते है?

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

(e) ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन है?

ब्रह्म समाज

स्थापना - 1828
संस्थापक - राजा राम मोहन राय आगे चलकर देवेन्द्र नाथ ठाकुर व केशव चंद्र सेन द्वारा आगे बढ़ाया
कार्य - सामाजिक - धार्मिक सुधार
- हिन्दू धर्म की कुरीतियों को दूर
- बौद्धिक व तार्किक जीवन पर बल आदि

3

(f) गीतांजली पुस्तक के लेखक कौन

गीतांजली
↳ लेखक रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा बांग्ला भाषा में लिखि
- यह काव्यों का संग्रह
- 1913 इसके लिए साहित्य का नोबल पुरस्कार दिया।

3

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(G) अरस्तु द्वारा दिए गए चार कार्डिनल गुणों के नाम बताइये

अरस्तु द्वारा दिये गये चार कार्डिनल निम्न है

चार कार्डिनल
→ विवेक – सद् का प्रकाशक
→ साहस – यह को साहस बनाये
→ संयम → उत्पादक को
→ न्याय → तीनो कार्यों में हस्तक्षेप न करे न्याय की स्थिति उत्पन्न होगी।

(H) तुलसीदास की तीन प्रसिद्ध रचनाओ ?

A तुलसीदास जी सगुण राम भक्ति धारा कवि है व इनकी रचनाएं

(क) रामचरित मानस – अवधी भाषा
– महाकाव्य
– राम के आदर्शजीवन पर प्रकाश

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

(२) गीतावली - [illegible] दोहे चौपाई संरचित
(३) दोहावली - दोहा व सोरठे का संग्रह

(I) समानुभूति को समझाइये ?

समानुभूति के अंतर्गत [illegible] की भावनाओं व परिस्थितियों को समझना उनकी कठिनाईयों व तकलीफों को तन्मयता से [illegible] गहनता से महसूस करने तथा उन्हें [illegible] करने का भाव निहित होता है।

- लोक सेवकों में समानुभूति का भाव होना आवश्यक ताकि जनहित में कार्य कर सके।

(J) सर्वोदय का अर्थ समझाइये

सर्वोदय की अवधारणा गांधी जी द्वारा दी गई जिसका अर्थ - सभी का (स्त्री-पुरुष) आदि का सर्वांगीण उदय (राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक, धार्मिक) से लिया जाता है।

3

2/20

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार

(4) मनोवृत्ति के घटकों के नाम बताइए?

मनोवृत्ति के घटक

- संज्ञानात्मक घटक - धारणा, विचार, विश्वास लिया जाता
- भावनात्मक घटक - पसंद-नापसंद, सुख-दुःख भाव
- व्यवहारात्मक घटक - कार्य करने की तत्परता

3

(5) केन्द्रीय सतर्कता आयोग से आप क्या समझते है?

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(M) सत्यनिष्ठता

A. सत्यनिष्ठता सिविल सेवा का आधारभूत मूल्य है जिसके अंतर्गत प्रलोभन, दबाव, भय एवं पूर्वाग्रह आदि से रहित होकर संवैधानिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रखते हुए सार्वजनिक हित में अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए कर्तव्यों का दृढ़ता पूर्वक पालन करना है।

(N) भावनात्मक बुद्धिमत्ता

A. संवेगात्मक बुद्धि मनुष्य की ऐसी क्षमता है जिससे वह अपने व दूसरों के संवेगों को देखते हैं समझते हैं उनकी तीव्रता व प्रभाव का आकलन करते हैं उन्हें संबंधित विनियमित करते हुए वांछित अनुक्रिया करते जिससे संबंधों में समन्वय बना रहे

(O)

(10) सद्गुण

उचित कर्मों के निरंतर पालन व अभ्यास से मनुष्य का विशेष प्रकार का नैतिक गुण विकसित होता है जिसे सद्गुण कहते है

- सद्गुण से चरित्र का उत्कर्ष होता
- सुकरात ने ज्ञान को सद्गुण कहा

3

प्रश्न 2 (A) लोक-सेवकों हेतु आचरण संहिता को समझाइए।

आचरण संहिता से तात्पर्य किसी संगठन, समाज के पदाधिकारियों के आचरण को निश्चित व निर्देशित करने के लिए बनाए गए नियमों का समूह व संग्रह होता है जिसके अनुपालन करने की अपेक्षा की जाती है तथा उल्लंघन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही होती है।

लोकसेवा में आचरण संहिता का प्रयोग करने से निम्न प्रकार से प्रभाव पड़ेगा

- ईमानदारी, सत्यनिष्ठा व कर्तव्यनिष्ठा का विकास होगा।
- प्रशासनिक कार्यकुशलता में वृद्धि होगी
- लोकसेवकों में निष्पक्षता, राजनैतिक तटस्थता का भाव विकसित होगा।
- नैतिक आचरण का विकास
- सत्ता के दुरुपयोग को रोका जा सकता है
- लोकसेवा के प्रति जनता का विश्वास बढ़ेगा।

अतः लोकसेवकों के लिए आचरण संहिता का होना आवश्यक।

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

है जिससे लोक कल्याणकारी [illegible] व सुशासन की स्थापना की जा सकती है।

प्रयास

कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(B) निष्पक्षता एवं असमर्थवादी, वस्तुनिष्ठता समझाइए ?

A. निष्पक्षता, असमर्थवादी व वस्तुनिष्ठा यह लोक सेवा के आधारभूत है अतः लोक सेवकों से यह आशा की जाती है वह इन मूल्यों से युक्त हो व अपने कार्यों का संपादन करेंगे।

इन मूल्यों को निम्न प्रकार से देख सकते है-

निष्पक्षता => इसके अंतर्गत जाति, धर्म, लिंग, भाषा, क्षेत्र, सम्पत्ति आदि के आधार पर जनता के साथ भेदभाव नहीं करना।

असमर्थवादी => लोकसेवक व्यक्तिगत रूप से किसी भी राजनीतिक दल में आस्था रखता या पसंद करता हो किंतु, प्रशासनिक कार्यों के संपादन के क्रम में किसी भी पक्ष की तरफदारी न करते हुए तटस्थता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

वस्तुनिष्ठता => इसके अंतर्गत सिविल

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

सेवकों द्वारा सार्वजनिक नियुक्तियाँ करने, संविदाओं की स्वीकृति, किसी व्यक्ति विशेष को पुरस्कृत, लाभ, कार्यों की संस्तुति आदि निर्णय लेते समय लाभों, साक्ष्यों को आधार बनाना, मनमाने तरीके से कार्य नहीं करना वस्तुनिष्ठता कहलाती है।

इन मूल्यों से युक्त सिविल सेवक अपने कर्तव्यों का पालन सत्यनिष्ठा, ईमानदारी व जवाबदेहिता से करेगा व जनहित में कार्य करेगा।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या 10

भ्रष्टाचार के प्रभावों की विवेचना कीजिये

संथानम समिति के अनुसार "भ्रष्टाचार का आशय किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा कार्य निष्पादन के दौरान [illegible] गैर कार्य की [illegible] किया जाये या [illegible] बूझकर कार्य न करना भ्रष्टाचार की श्रेणी में [illegible]"

भ्रष्टाचार की व्याख्या व्यापक [illegible] इसे निम्न प्रकार [illegible] सकते हैं–

- राजकीय पद या अधिकारों एवं शक्तियों का दुरुपयोग।
- सार्वजनिक [illegible] तथा भंडार का अनावश्यक प्रयोग।
- आय से अधिक सम्पत्ति
- अनैतिक आचरण करना।
- उपहार प्राप्त करना।
- ठेकेदार से कर्मों की [illegible] प्राप्त करना।
- भर्ती, नियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति के संबंध में गैर-कानूनी रूप से धन लेना।
- राजकीय आवास पर अनाधिकृत कब्जा
- सरकारी भूमि की खरीद-बिक्री में धोखाधड़ी
- राजकीय कर्मचारियों को अपने निजी कार्यों में प्रयोग।

10 भ्रष्टाचार के प्रकारो की विवेचना कीजिये

संथानम समिति के अनुसार "भ्रष्टाचार का आशय किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा कार्य निष्पादन के दौरान ऐसा कृत्य जो स्वार्थ की खातिर से किया जाये या जान बूझकर कार्य न करना भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता"

भ्रष्टाचार की अवधारणा व्यापक है इसे निम्न प्रकारो से देख सकते है-

- शासकीय पद या अधिकारों एवं शक्तियों का दुरुपयोग।
- सार्वजनिक धन तथा भंडार का अनावश्यक प्रयोग
- आय से अधिक सम्पत्ति
- अनैतिक आचरण करना
- उपहार प्राप्त करना
- ठेकेदार या फर्मों को रियायत प्रदान करना
- भर्ती, नियुक्ति, स्थानान्तरण, पदोन्नति के संबंध में गैर-कानूनी रूप से धन लेना
- शासकीय आवास पर अनाधिकृत कब्जा
- आवासीय भूमि की खरीद-बिक्री में धोखाधड़ी
- शासकीय कर्मचारियों को अपने निजी कार्यों में प्रयोग

उपरोक्त भ्रष्टाचार की श्रेणी में लिये जाते है जो शासन प्रशासन को कमजोर, जनता का भरोसा कम कर रहा है इसके लिए कानूनो का कठोरता से पालन, नैतिक मूल्यों की जागृति, आचरण संहिता आदि का प्रयोग कर इसको कम करने का प्रयास किया जा रहा है

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(D) दयानंद सरस्वती के सिद्धांत

दयानंद सरस्वती का मूल नाम 'मूलशंकर' था जो 19वी सदी के सामाजिक-धार्मिक कुप्रथाओं में एक तथा रूपके कार्यों का संपादन 'आर्यसमाज' के माध्यम से करते थे

दयानंद सरस्वती के सिद्धांत को निम्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है

सिद्धांत

1	2	3	4
सामाजिक क्षेत्र	राजनैतिक	धार्मिक क्षेत्र	शिक्षासंबंधी

सामाजिक क्षेत्र ⇒ वर्ण व्यवस्था के समर्थक किंतु वर्ण का निर्धारण कर्म हो न कि जन्म

- समाज में संतुलन व सामंजस्य के लिए कार्यों का विभाजन आवश्यक
- कुप्रथाओं का विरोध (दहेजप्रथा, पुरोहितवाद आदि)

राजनैतिक क्षेत्र ⇒ प्रजातंत्र के पोषक थे स्वतंत्रता, समानता पर विश्वास

- ग्राम शासन की अवधारणा दो, तीन, पांच ग्राम के पीछे एक प्रशासनिक कार्यालय हो

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न संख्या

- भारतीय राष्ट्रवाद के पुजारी
- मूर्तिपूजा/हिंसा को अव्यवहारिक मानते हुए राजनैतिक व्यवस्था में दण्ड की अनिवार्यता स्वीकार

धार्मिक क्षेत्र ⇒ एकेश्वरवाद पर विश्वास
⇒ मूर्तिपूजा का विरोध
⇒ वेद ईश्वर पर बल
⇒ आत्मा की स्वतंत्रता ⇒ होने वहा मनुष्य की आत्मा काम करे के लिए स्वतंत्र किंतु फल के लिए ईश्वर के अधीन
⇒ शुद्धि आंदो०

शिक्षा ⇒ गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को बल

स्वतः दयानंद सरस्वती जी के सिद्धांतों को प्रत्येक क्षेत्र में देख सकते है अतः वर्तमान में भी उनके लोकतांत्रिक मूल्यों स्वराज की अवधारणा वेदों की महत्ता आदि को स्वीकार किया जाता है।

½

(6) लोक सेवा हेतु आधारभूत योग्यता को बताइये।

उ. ब्रिटिश काल में लोकसेवको का कार्य कानून व्यवस्था को बनाए रखना रही 1947 के बाद लोक सेवको के कार्यों में वृद्धि हुई जिसमें अनिवार्य लोककल्याणकारी व सुशासन की स्थापना इसके सुचारु संचालन के लिए लोकसेवको को कुछ आधारभूत मूल्यों से युक्त होना चाहिए नोलन समिति ने लोकसेवको के लिए कुछ आधारभूत मूल्यों की बात कही जो निम्न

आधारभूत मूल्य

निःस्वार्थ निष्ठता | सत्यनिष्ठा | वस्तुनिष्ठा | जवाबदेहिता | खुलापन | ईमानदारी | नेतृत्व

निःस्वार्थ निष्ठता ⇒ व्यक्तिगत हित को त्यागकर सार्वजनिक हित में निर्णय लेना

सत्यनिष्ठता ⇒ प्रलोभन, दबाव, भय आदि के कारण अपने कर्तव्यों से विमुख न होना

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

वस्तुनिष्ठता => सार्वजनिक नियुक्ति, पुरस्कार देने, लाभों की संस्तुति योग्यता को वरीयता

जवाबदेहिता => अपने कार्यों व निर्णयों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह

खुलापन => निर्णय व कार्यों में पारदर्शिता

ईमानदारी => द्वन्द्व की स्थिति में व्यक्तिगत स्थिति की जगह सार्वजनिक हित को वरीयता।

नेतृत्व => उपरोक्त तत्वों का पालना व समर्थन करते हुए उदाहरण के रूप में प्रस्तुत

उपरोक्त मूल्यों का सिविल सेवक में होना आवश्यक है तभी वह कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए सार्वजनिक हित में कार्य करेगा।

प्रश्न संख्या मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न (5) भ्रष्टाचार को कम करने में सामाजिक मीडिया और इंटरनेट की भूमिका बताइए

भ्रष्टाचार का आशय किसी शासकीय कर्मचारी द्वारा अपने सार्वजनिक पद, स्थिति, अधिकार का दुरुपयोग करते हुए किसी प्रकार का आर्थिक या अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त करना है।

भ्रष्टाचार को कम करने के लिए जहाँ नियम कानून का सहारा लिया जाता है वही सोशल मीडिया व इंटरनेट अहम भूमिका निभाता है -

- भ्रष्टाचार को उजागर करना जिससे जनता को ज्ञात होता व सरकार पर दबाव बनता
- स्टिंग ऑपरेशन के माध्यम
- रिश्वत लेने वालो का वीडियों सोशल मीडिया पर अपलोड कर
- शासन -प्रशासन में डिजिटलीकरण
- ई-प्रशासन
- सरकारी सेवाओं की ऑनलाइन उपलब्धता।

आदि ने शासन-प्रशासन में भ्रष्टाचार को कम किया किंतु अभी भी अधिकतर लोग सोशल मीडिया व

इंटरनेट का उपयोग नहीं करते जिससे
यह साधन ज्यादा कारगर नहीं हो रहे
कभी भ्रष्टाचार की घटनाएं सुनाई देती
जैसे मनरेगा में भ्रष्टाचार, व्यापम घोटाला आदि
इसके लिए व्यापक पैमाने पर जागरूकता व
इन लोगों को शिक्षित होने की आवश्यकता है

(Mains Answer Sheet)

(9) शासन एवं प्रशासन में सांवेगिक बुद्धि की उपयोगिता का परीक्षण करें

सांवेगिक बुद्धि का तात्पर्य मनुष्य की उस क्षमता से है जिसमें वह अपने और दूसरों के संवेगों को देखना, समझना, संवेगों की तीव्रता और प्रभाव का आकलन कर फिर उन्हें नियंत्रित व प्रबंधित करता है। अतः प्रत्येक राजनीतिज्ञ व प्रशासक को सांवेगिक बुद्धि से युक्त होना चाहिए।

शासन व प्रशासन में सांवेगिक बुद्धि की उपयोगिता को देखें तो वह निम्न है

शासन में उपयोगिता :-

- विभिन्न दबाव समूहों के प्रबंधन में नेताओं में उच्च दर्जे की सांवेगिक बुद्धि होनी चाहिए
- जनता को प्रेरित
- सामाजिक परिवर्तन या नवाचार के लिए
- भाषावाद व क्षेत्रवाद जैसी समस्याओं के समाधान के लिए

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रशासन में उपयोगिता

- भावनात्मक बुद्धि प्रशासनिक अधिकारियों में सहयोग, समायोजन, संवेदनशीलता, अभिप्रेरणा जैसे तत्वों को बढ़ात
- अधिकारी विपरीत परिस्थितियों में निराश नहीं
- स्वयं पहल करना सहकर्मियों को अभिप्रेरित कर कार्य करवाना
- भ्रष्टाचार के लिए जागरूक व प्रोत्साहित
- सांप्रदायिक दंगों में कमी
- जनता को उपयोगी कार्यक्रम बनाना तथा उसमें उनकी भागीदारी के लिए प्रोत्साहित

इस तरह हम शासन व प्रशासन में भावनात्मक बुद्धि की उपयोगिता को समझकर जनता के हित में उपनिहित कार्यों का संपादन किया जा सकता है।

4 1/2

संख्या

(Mains Answer Sheet)

(6) (D) प्रबोधक संप्रेषण की संकल्पना की विवेचना कीजिए?

प्रबोधक संप्रेषण एक प्रकार का संचार, अभिव्यक्ति है जो उद्देश्य पूर्ण विवेक व तर्क देकर श्रोताओं और पाठको की मनोवृत्ति में परिवर्तन के उद्देश्य से संचालित किया जाता है।

जैसे - सीधे वार्तालाप, पोस्टर, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, अखबार आदि के माध्यम से होता है।

उपयोगिता

प्रबोधक संप्रेषण की विशेषताओं को निम्न प्रकार से देखा जा सकता

- इसके माध्यम से नकारात्मक मनोवृत्ति को सकारात्मक मनोवृत्ति में परिवर्तन किया जा सकता है।
- समाज व धार्मिक क्षेत्र में इसके माध्यम से कुरीतियों व अंधविश्वास को समाप्त किया जा सकता है
- प्रबोधक सम्प्रेषण से नेताओं द्वारा जनता को अपनी पार्टी की ओर आकर्षित कर सकते है
- जैसे केवल इसके माध्यम से क्षेत्रवाद

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

नक्सली पर
भाषावाद जैसी अलगाववादी भावनाओं को परिवर्तित कर सकते है

- दंगों को होने से रोका जा सकता है।
- लोक सेवक अपने माध्यम से विभिन्न विभागों में सामंजस्य व समन्वय स्थापित कर सकता।
- लोगों की मनोवृत्ति को सही दिशा में मोड़ा जा सकता है

इस तरह प्रभावी संप्रेषण से जनहित व देशहित में कार्यों को संपादित किया जा सकता है।

(k) लोक सेवा मे समानुभूति के महत्व को बताइए?

समानुभूति संवेगात्मक भाव से संबंधित है, जिसमें दूसरों की समस्याओं को गहनता पूर्वक सुनते है, महसूस करते है तथा उसे दूर करने का प्रयास करते है इससे संवेदनशील सक्रियता का भाव प्रकट होता है। लोकसेवक को ऐसे मूल्यों का होना आवश्यक है

लोक सेवा में समानुभूति के महत्व को निम्न प्रकार से समझ सकते है

- कमजोर वर्गों के दुःखो को दूर करने के लिए
- वंचितो के प्रति समर्पण भाव
- योजनाओं का लाभ सही लाभार्थी तक पहुचाने के लिए
- लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना
- जनता का प्रशासन में विश्वास बढ़ाने
- जनसहभागिता के लिए।
- प्रशासन मे निष्पक्षता के पालन
- सुशासन की स्थापना

आदि कार्यों को कर्तव्यनिष्ठता

व ईमानदारी युवा ... के लिए लोक
सेवा में समानुभूति का होना आवश्यक
है तभी जनकेन्द्रित शासन की
स्थापना होगी जिसके केंद्र में जनता होगी
व लोकसेवक उनकी सेवा के लिए हमेशा
तैयार रहेंगे तभी सामाजिक - आर्थिक
समानता स्थापित होगी।

5

Q (15) लोक प्रशासन में नैतिक दुविधा को समझाइए

जब किसी नैतिक दुविधा के आशय किसी व्यक्ति के पास दो या दो से अधिक विकल्प हो एवं यह विकल्प एक-दूसरे भिन्न व एक साथ न चुने जा सकते हो किंतु किसी एक विकल्प को चुनना अनिवार्य व किसी भी विकल्प से पूर्ण संतुष्टि न हो तो ऐसी स्थिति नैतिक दुविधा की होती है

लोक सेवा में नैतिक दुविधा को दो प्रकार से देख सकते है

- व्यक्तिगत लाभ आधारित नैतिक मूल्य में दुविधा
- द्विविकल्पीय नैतिक मूल्यों में दुविधा

व्यक्तिगत लाभ आधारित नैतिक मूल्य में दुविधा => इसमें व्यक्तिगत लाभ व सार्वजनिक लाभ के बीच दुविधा की स्थिति

(Mains Answer Sheet)

- इसमें हम सार्वजनिक हित को वरीयता देंगे निर्णय लेते समय।

द्विविकल्पीय नैतिक मूल्यों में दुविधा। ⇒ जब दोनों विकल्प नैतिक मूल्य से जुड़े हों

निर्णय
- तो ऐसी स्थिति में निर्णय कानून, नियम के आधार पर
- सामाजिक हित व राष्ट्रीय हित को वरीयता
- वरिष्ठ अधिकारियों से परामर्श से

उपरोक्त के आधार पर लोक सेवा में नैतिक दुविधा की स्थिति को सुलझा सकते है व उचित निर्णय ले सकते है जिसमें सभी का हित समाहित हो।

5

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) | सफलता का प्रवेश द्वार...

(प्र) मनोवृत्ति के निर्माण के उत्तरदायी विभिन्न कारको को समझाइये?

मनोवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति का, किसी व्यक्ति के प्रति विश्वास, विचार, व्याख्या (संज्ञानात्मक पक्ष) पसंद-नापसंद का भाव (भावनात्मक पक्ष), अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार, कार्य करने की तत्परता (व्यवहारात्मक पक्ष) को लिया जाता है।

अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती बल्कि परिस्थिति, अनुभव, सामाजिक वातावरण के साथ अंतःक्रिया के फलस्वरूप धीरे-2 विकसित होती जिसमें निम्न कारक उत्तरदायी होती है -

कारक
- सहचर्य द्वारा सीखना
- दण्ड पुरस्कार
- रोलमॉडल
- समूह के माध्यम
- अन्य

सहचर्य द्वारा सीखना => इसके अंतर्गत परिवार, विद्यालय, मित्र आदि आते है जिनके सहयोग से मनोवृत्ति का निर्माण होता।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

दण्ड व पुरस्कार => पुरस्कार व दण्ड के माध्यम से अच्छे कार्यों के प्रति सकारात्मक व दण्ड व निंदा के कार्यों नकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण

(3) रोलमॉडल => अपने पसंदीदा रोलमॉडल को देखकर उनके अनुसार कार्य

(4) समूह के माध्यम => किसी विशेष आधार पर हम कहा कहा स्थान निर्धारित समूह के माध्य

अ-4 - मीडिया, फ़िल्में, मतदान, विविध आदि भी मनोवृत्ति निर्माण में सहायक

उपरोक्त कारण मनोवृत्ति के निर्माण में सहायक होते है जो मनुष्य व अच्छे कार्यों के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण करते है।

4/10

(9) गुरुनानक जी के दर्शन को समझाइये

गुरुनानक जी सिक्ख सम्प्रदाय के प्रथम गुरु थे जिन्होंने 15 वी शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधारकों में से एक थे उनके उपदेशों ने जनता के मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ी है

इनके दर्शन को हम निम्न बिंदुओं के आधार पर देख सकते है-

गुरुनानक जी का दर्शन

एक ईश्वर मे विश्वास	सतनाम और बल	गुरु का महत्व	सामाजिक कुरीतियों खंडन	ध्यान सिद्धांत

एक ईश्वर पर बल – ईश्वर को सर्वशक्तिमान् उनका कहना था कि ईश्वर को किसी मंदिर तक सीमित नही किया जा सकता वह प्रत्येक व्यक्ति के अंदर है

सतनाम पर बल – गुरुनानक जी ने जोर देकर कहा प्रभु के 'सतनाम' उच्चारण ही पूर्ण समर्पण की प्राप्ति संभव

- मस्तिष्क काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से ग्रसित व सतनाम की ओर उन्मुख नहीं हो सकता
- सतनाम का उच्चारण मस्तिष्क को बुराईयों से हटाकर ईश्वर में संलग्न कर सकता है

सामाजिक कुरीतियों का विरोध ⇒ समाज में व्याप्त अंधविश्वास व रूढ़ीवाद का विरोध
- जातिप्रथा का बहिष्कार
- वर्णव्यवस्था का विरोध
- विश्व बंधुत्व की बात
- सती प्रथा का विरोध
- समानता पर बल

धार्मिक सिद्धांत - ईश्वर
- जगत के कण-कण में ईश्वर
- ईश्वर की व्यापकता
- गुरुवाणी के बारे में बोध नहीं
- ईमानदारी व मेहनत से रोटी कमाना
- भेदभाव को समाप्त
- सदैव प्रसन्न
- लोभ-लालच, अंहकार से दूर
- मोक्ष की प्राप्ति हेतु उपाय

इस तरह गुरुनानक जी ने अपने वाणी से समाज की कुरीतियों पर कुठाराघात किया व परमात्मा प्राप्ति का मार्ग बताया तथा उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

5

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

Q. 3

Case study 1

उपरोक्त मामले का गंभीरता से अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि यह कुछ कानून के उल्लंघन (बाल विवाह + दहेज प्रथा), मनोवृत्ति, अनुनय-विनय आदि से संबंधित है

इस मामले में दो पक्षकार उभरकर आते हैं

एक आप – आईएएस समक्ष चुनौति
बाल विवाह रोकना
बिना पुलिस शिकायत

दोस्त (बाल विवाह करा रहा) – आर्थिक स्थिति को लेकर विवश

उक्त प्रकरण निम्न समस्याओं के बारे में ध्यान आकृष्ट किया

- लोगों में दहेज विरोधी कानून व बाल विवाह लेकर जागरूकता का अभाव
- बाल विवाह से जो समस्या उत्पन्न होगी उसकी अज्ञानता
- कानून के बाद में लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं

(Mains Answer Sheet)

आदि समस्याऐं उभरकर आती है
जो बाल विवाह को रोकने में बाधक हो

(B) बाल विवाह से निम्न समस्याऐं होगी
- आने वाली पीढ़ी कुपोषण ग्रस्त
- माता -बच्चे के स्वास्थ्य पर प्रभाव
- कम उम्र में शादी से उच्च शिक्षा का अभाव
- जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा मिलता।
- बाल विवाह IMR व मातृ मृत्यु दर को बढ़ाता
- परिवार की देखभाल अच्छे से नहीं
आदि समस्याऐं उभरकर आती
जो देश के विकास पर प्रश्नचिन्ह लगाती

(C) बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 होने के बावजूद बाल विवाह को पूर्णत: रोका नहीं जा सका
किंतु व्यापक स्तर पर
- शिक्षा के प्रसार
- जागरूकता
- कानून के भय
- लोगो की मनोवृत्ति में परिवर्तन कर
बाल विवाह को व्यापक स्तर पर कम किया गया किंतु इसका उन्मूलन अभी नही हो सका

Qu. 4

Case study - 2

उपरोक्त मामले के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह मामला सत्यनिष्ठा, समानुभूति, कार्य के प्रति समर्पण, पितृसत्तात्मक आदि से संबंधित है

इस केस में दो पक्षकार है

	चुनौतियाँ
कृपा (वाणिज्य कर अधिकारी के पद पर चयन)	कार्य का न होना (अनभिज्ञता एवं समर्थ उप. है)
गांव की मुखिया महिला	- अधिकारों का प्रयोग स्वयं नहीं करती - जनहित कार्यों की अवहेलना आदि

मैं उक्त परिस्थिति को निम्न रूप से देखता हूं

- समाज में अभी भी पुरुषवादी प्रवृत्ति विद्यमान
- महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं किया जाता।
- महिलाओं के आत्मनिर्भर अधिकारों के प्रति

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कालिंदी एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

उदासीनता
- अपने कर्तव्यों का पालन नहीं किया
- स्व विवेक से कार्यों की अवहेलना

(ब) स्थानीय निकायों में महिलाओं को 33% आरक्षण का प्रावधान किया गया किंतु इस मामले में आरक्षण की व्यवस्था का दुरुपयोग किया जा रहा है।

यदि हम एक मामले के आरक्षण दुरुपयोग को लेकर महिला आरक्षण की संकल्पना को असफल नहीं कह सकते क्योंकि कई गांव की मुखिया महिलाऐं महिलाओं की समस्याओं, गांव के विकास व जनहित आदि कार्यों को बड़ी सक्रियता से कर रही है।

यदि हम महिला आरक्षण (स्थानीय निकायों) को हटा दे तो इससे महिलाओं की राजनीति में भागीदारी न के बराबर, स्वतंत्रता समानता व अन्य अधिकारों से वंचित रह जायेगी अतः आरक्षण की व्यवस्था को असफल नहीं कहा जा सकता।

(स) इस समस्या के समाधान के लिए निम्न कदमों उठाना आवश्यक होगा
- महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना
- महिलाओं में अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

- महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करना
- पुरुषों की मनोवृत्ति में परिवर्तन करना कि महिलाएं रूपये कामों को अन्जाम दे सकती है

उपरोक्त कदमों को उठाकर इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है

(4) आरक्षण के दुरुपयोग की यह समस्या स्थानीय राजनैतिक स्तर तक सीमित न होकर यह अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती-

सामाजिक क्षेत्र => पुरुष प्रधान मानसिकता
=> घरेलू कामकाज में
=> इसके अलावा कोई निर्णय लेने में कोई प्राथमिकता नही
- समाज में महिलाओं को कमजोर समझना आदि

आर्थिक क्षेत्र => समान काम में कम वेतन
=> महिलाओं के कामकाज को कुछ क्षेत्रो तक सीमित (घरेलू, पढ़ाना आदि)

धार्मिक क्षेत्र => महिलाओं से पुजापाठ नही
=> मंदिरो के प्रवेश रोकना

अतः महिलाओं के संदर्भ यह समस्या सभी क्षेत्रो दिखाई देती है

(5) उपरोक्त परिस्थिति में नैतिक मूल्य
- कर्तव्यों का दृढ़ता से पालन नही
- सत्यनिष्ठा का अभाव

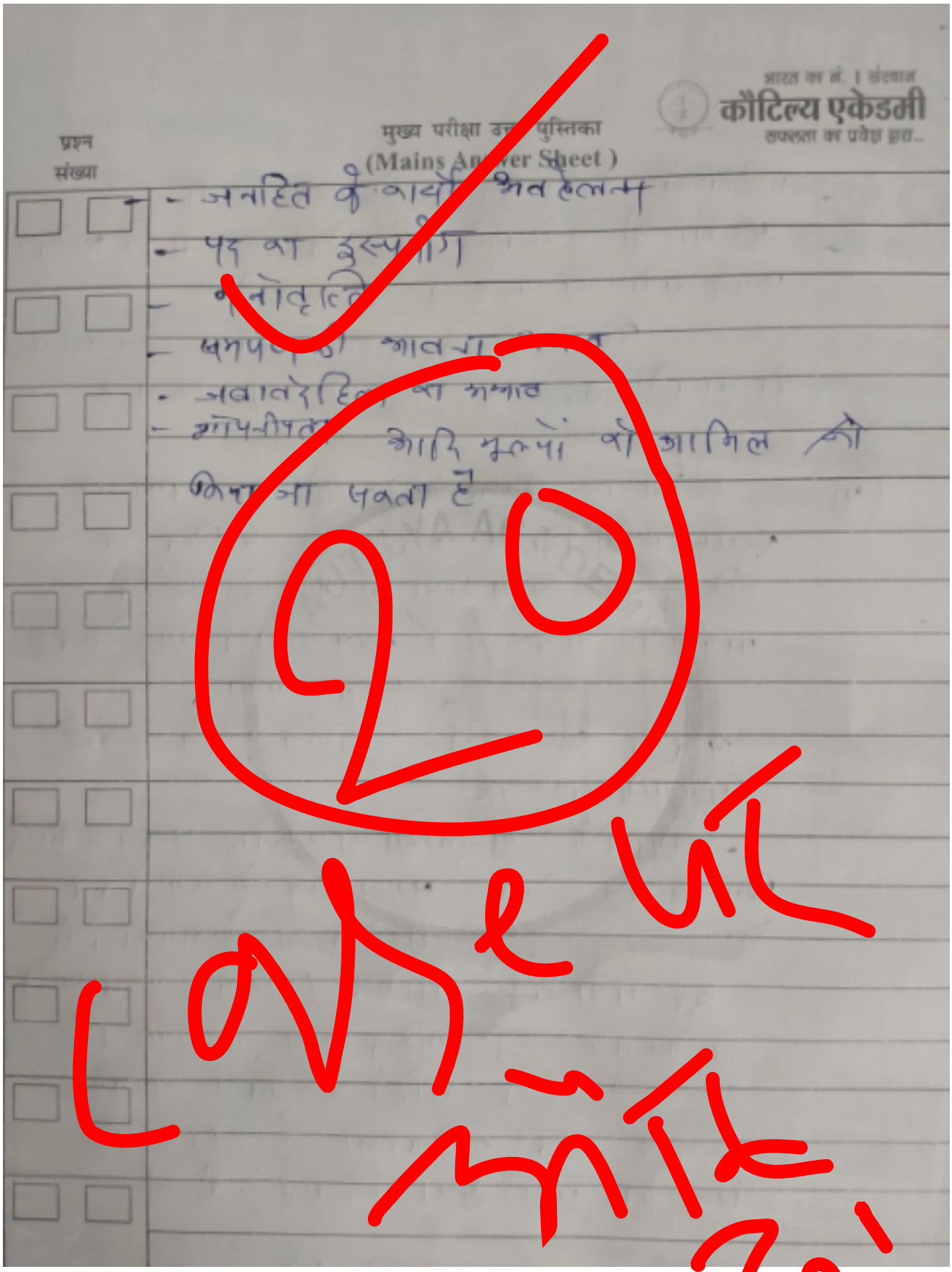

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

- जनहित के कार्यों की अवहेलना
- पद का दुरुपयोग
- मनोवृत्ति
- समर्पण का भाव [illegible]
- जवाबदेहिता का अभाव
- लोकप्रियता आदि मूल्यों को शामिल किया जा सकता है